M.A.(Education),Part-1,Paper-X,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- Meaning, Aims and Importance of Environmental Education (पर्यावरण शिक्षा का अर्थ, लक्ष्य एवं महत्व)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

"पर्यावरण संचेतना उत्पन्न करने की महती आवश्यकता है। इसका सभी युगों में, सभी आयु वर्गों में और समाज के सभी अंगों में प्रसार होना चाहिए। इसका प्रारम्भ बाल्यावस्था से ही हो। पर्यावरणीय संचेतना को विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तरीय शिक्षण में समाविष्ट किया जाए। इस पक्ष को समग्र शिक्षा प्रक्रिया में एकीकृत किया जाए।"

"There is paramount need to create a consciousness of the environment. It must permeate all ages and all sections of society, Beginning with the chile. Environmental consciousness should inform teaching in schools and colleges. This aspect will be integrated in the entire educational process."
-New Education Policy, 1986, Environmental Education, p. 24

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता और इसका महत्त्व आज सभी देशों के लिए समान रूप से है, क्योंकि विश्व के सभी देश आज किसी न किसी प्रकार के पर्यावरणीय संकट से ग्रस्त हैं, चाहे विकासशील देश हों या विकसित। पर्यावरण की समस्या के कारण सभी चिन्तित हैं । प्राकृतिक संसाधनों का जिस निष्ठुरता से शोषण हुआ है और उससे जो प्रकृति के संचित कोष रिक्त हो रहे हैं, उसे वापस पूरा नहीं किया जा सकता और यहाँ तक कि लोगों के अदूरदर्शितापूर्ण कार्य व्यवहार से जो जल, वायु, भूमि प्रदूषण हुआ है, उसे निरापद भी नहीं जा सकता। हाँ यह संभव है कि यदि पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य (निवासी) यह समझने लगे कि उनके कृत्यों से स्वर्ग नरक बन रहा है। विशाल प्राकृतिक निधियों (जल, वायु, भूमि, पेड़-पौधे, वनस्पति) के भण्डार वालो धरती रिक्त हो चली है। भविष्य की बात छोड़ें, वर्तमान पीढ़ी का जीवन जीना भी दूभर हो गया है, तो संभव है कि यह एकतरफा नष्ट हो रही स्थिति पर कुछ काबू पाया जा सके। आगे उसे और विनाश से बचाया जा सकता है। यहाँ के लोगों को समझना होगा कि पर्यावरण उनकी अपनी सम्पत्ति है व उन्हें इसका ख्याल रखना चाहिए। पर्यावरण के सन्दर्भ में यही जानकारी प्राप्त करना अथवा उपलब्ध कराना ही 'पर्यावरण शिक्षा' के अन्तर्गत आता है।

2. 2 पर्यावरण शिक्षा का अर्थ, लक्ष्य एवं महत्त्व
(Meaning, Aims & Importance of Environmental Education)

'पर्यावरण शिक्षा' वस्तुत: विश्व समुदाय को पर्यावरण संबंधी दी जाने वाली वह शिक्षा है, जिससे मनुष्य समस्याओं से अवगत होकर उनका हल खोज सके और साथ ही भविष्य में आ सकने वाली समस्याओं को रोक सके।

इस प्रकार 'पर्यावरण शिक्षा' एक सामान्य शिक्षा नहीं, बल्कि पर्यावरण की समस्या से उनके निदान, हल व बचाव आदि संबंधित जानकारी प्राप्त करने की शिक्षा है या उसे कहें कि 'पर्यावरण शिक्षा' प्राणीमात्र को वर्तमान में बचाये रखने तथा सुरक्षित भविष्य प्रदान करने की शिक्षा है, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

प्रकृति व प्राकृतिक संसाधन संरक्षण संगठन (I.U.C.N.) के अनुसार, "पर्यावरण शिक्षा उन मूल्यों की पहचान करने और अवधारणाओं को सुस्पष्ट करते हुए वांछित कौशलों और दृष्टिकोणों का विकास करने की प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति अपनी संस्कृति और जैव-भौतिक परिवेश में परस्पर अन्तर्निर्भरता को समझ सके। इसमें पर्यावरण

की गुणवत्ता से सम्बद्ध समस्याओं और मुद्दों पर निर्णय लेने तथा स्वयं की व्यवहार संहिता निर्मित करने का अभ्यास भी सन्निहित है।"

-प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का प्रतिवेदन, 1970

"Environmental Education is the process of recognizing values and clarifying concepts in order to develop skills and attitude necessary to understand and appreciate the inter-relatedness among man, his culture and his bio-physical surroundings. It also entails practice in decision making and self formulation of a code of behaviour about problems and issues concerning environmental quality."

-A Report of Union for Conservation of Nature & Natural Resources or I.U.C.N. on Curriculum for Schools

अतः हम यह कह सकते हैं कि, पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण के बारे में जानकारी देने, समझने और मानव द्वारा किये जा रहे उसके विविध कार्यकलापों के बारे में गुण व अवगुण के आधार पर जानकारी देने की व्यापक प्रक्रिया है, तो यह सर्वथा उचित व्याख्या है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में पर्यावरण के संरक्षण, रखरखाव तथा सुधार के बारे में सोचने और समझने का अवसर प्रदान करती है।

2.2.1 पर्यावरण शिक्षा का महत्व (Importance of Environmental Education)

पर्यावरण शिक्षा की उपयोगिता आज हमारे जीवन में दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। पर्यावरण शिक्षा के महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है--

1. पर्यावरण शिक्षा के ही द्वारा हम वनों के महत्त्व को समझ सकते हैं। यह वनों से होने वाले लाभों का ज्ञान कराकर व्यक्तियों को वन संरक्षण के लिए उत्प्रेरित करती है।

2. पर्यावरण शिक्षा से पशुचारण (खुले रूप) से होने वाली हानियों के बारे में लोगों को पता चला व यह शिक्षा ग्रामीणों का ध्यान आकर्षित करके उनको गाँवों में चारागाह विकसित करने की प्रेरणा देती है ।

3. पर्यावरण शिक्षा के द्वारा ही छात्रों को पता चलता है कि पर्यावरण को संतुलित एवं संरक्षित रखना हमारे लिये कितना महत्वपूर्ण है।

4. पर्यावरण शिक्षा के विषयों को समन्वित करके पढ़ाया जाता है, अत: छात्रों को यह ज्ञात होता है कि ज्ञान पृथक्-पृथक् इकाइयों में न होकर अखण्ड रूप में होता है।

5. पर्यावरण शिक्षा द्वारा बढ़ती हुई जनसंख्या से होने वाले विविध प्रकार के प्रदूषणों के बारे में ज्ञान मिलता हैं। जनसंख्या वृद्धि तथा शहरीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं का ज्ञान करवाकर छात्रों में परिवार नियोजन के लिए अनुकूल दृष्टिकोण पैदा करने में सहायता मिलती है।

6. पर्यावरण शिक्षा छात्रों में प्रदूषण रोकने की चेतना पैदा करती है।

7. पर्यावरण शिक्षा द्वारा छात्रों में राष्ट्र प्रेम व अन्तर्राष्ट्रीय भाव पैदा किया जा सकता है।

8. आधुनिक उद्योगों कितनी घातक समस्याएं उत्पन्न होती हैं. इसका ज्ञान छात्रों को पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा होता है।

9. पर्यावरण शिक्षा छात्रों को जनतांत्रिक नागरिक बनाने में सहायता करती है। उनको अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों का बोध होता है। छात्रों में इस शिक्षा द्वारा स्वतंत्र चिन्तन तथा स्वयं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होता है।

2.2.2 पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता (Need of Environment Education)

उपर्युक्त विवरण से 'पर्यावरण शिक्षा' के महत्त्व और उसकी आवश्यकता के सन्दर्भ में कुछ जानकारी अवश्य मिलती है, पर यह बात स्पष्ट नहीं है। अनेक बिंदुओं की एक लम्बी सूची विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित सम्मेलन व कार्य गोष्ठियों के प्रतिवेदनों के आधार पर बनाई जा सकती है, पर इतने वितरणों को यहाँ प्रस्तुत करने का कोई विशेष औचित्य नहीं है। एक व्यापक और सर्वसम्मत तथा संक्षिप्त समेकित विवरण पाठकों को 'पर्यावरण शिक्षा' के महत्त्व को प्रतिपादित करने हेतु यथेष्ट होगा, वह है-

1. सौरमंडल में केवल मात्र 'पृथ्वी' ही एक ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन संभव है तथा इसे नष्ट होने से बचाना है व उस पर बसने वाले प्राणी मात्र को सुखप्रद जीवन उपलब्ध कराना है।

2. जनसंख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हो रही है। इससे सारा प्राकृतिक चक गडबड़ा गया है। इस चक को संतुलित रखने के लिए जनसंख्या की वृद्धि को रोकना होगा।

3. पेड़ और वनस्पति ही केवल कार्बन-डाइ-ऑक्साइड (O) को प्राण वायु ऑक्सीजन में परिवर्तन कर देते हैं, अतः वायुमण्डल में ऑक्सीजन की कमी को कम करने के लिए मानव को क्या करना है व क्या नहीं करना है, इसकी जानकारी होनी चाहिए ।

4. प्रकृति में संसाधनों के सीमित ही क्षेत्र हैं, इसलिए उनका उचित व बुद्धिमतापूर्ण उपयोग करना लोगों को सिखाना होगा।

5. औद्योगिक क्रान्ति तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों के फलस्वरूप सुख-सुविधाओं के उपकरणों ने बहुत हो प्रदूषण फैलाया है। उन्हें नियंत्रित करने व बचाव के उपाय सुझाने हेतु कार्यक्रम चलाना होगा।

6. पर्यावरण संबंधी सभी जानकारी सभी को देना।

7. पर्यावरण संबंधी समस्याओं को समझने, उनका विश्लेषण करने तथा उनके समाधान मे तिए बौद्धिक क्षमता एवं कौशलों का विकास करना।

8. पर्यावरण के सांस्कृतिक आधारों की पहचान व प्रयुक्ति।

यहाँ इस बात की और ध्यान देना है कि पर्यावरण की सुरक्षा तथा संरक्षता के लिए पर्यावरण के बारे में व पर्यावरण के द्वारा हो निर्मित कोई कार्यक्रम अन्ततः प्रभावी और सफल हो सकता है, अतः पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रम आयोजित करते समय इन तीनों मूल बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा।

2.2.3 पर्यावरण शिक्षा का लक्ष्य (Aims of Environmental Education)

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य निम्न प्रकार से हैं-

1. जनता को पर्यावरण संबंधी ज्ञान कराना एवं सोचने की योग्यता का विकास करना।

2. पारिस्थितिकी संतुलन हेतु जागरूकता का विकास करना।

3. मानव को यह अवबोधन करवाना कि वह पर्यावरण का अभिन्न अंग है।

4. मानव की संस्कृति तथा जैव एवं भौतिक पर्यावरणों का भेद व परस्पर संबंधों की समझ उत्पन्न करना।

5. पर्यावरण संतुलन बिगड़ने वाले कारकों की पहचान करना।

6. उन क्रियाओं व आदतों का विकास करना, जो पर्यावरण निरूपण के लिये उत्तरदायी होती हैं।

7. जैव तथा भौतिक वातावरण की गुणवत्ता संबंधी समस्याओं के समाधान में सहभागी बनाने हेतु उचित मनोवृति विकसित करना।

8.पर्यावरण संतुलन बनाये रखने की रुचि विकसित करना।

2.2.4 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

यद्यपि प्रकृति की महत्ता तथा उसके सभी संसाधनों के अत्यन्त उचित उपयोग की शिक्षा आदिकाल में हो लोगों को मिलती होगी, पर निश्चय ही व अप्रत्यक्ष रूप में होती थी ।प्रकृति का आदर जीवन की समान्य कार्यशैली से जुड़ा होता था और पृथ्वी का प्रत्येक प्राणी प्रकृति के अनुकूल ही चलता था, पर आज जिस प्रकार की 'पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता महसूस हो रही है, उसका इतिहास केवल 'मानव पर्यावरण' पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जो जून, 1972 ई. में स्टॉकहोम (स्वीडन) में संयुक्त राष्ट्र (UN.) द्वारा सम्मादित किया गया, से ही प्रारम्भ होता है। यह करीब पांच दशक को अवधि की कुल कार्ययोजना और क्रियान्विति मात्रा है, जिस पर पूरा विश्व अवलम्बित है, भविष्य के प्रति आश्वस्त है।

स्टॉकहोम (5 जून से 16 जून, 1972 ई.) के 'मानव पर्यावरण' अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आधार पर यूनेस्कों ने यू.एन.ई.पी. (UNEP) के सहयोग से सन् 1975 ई. में एक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम' प्रारम्भ किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 13 से 22 अक्टूबर, 1975 ई. में बेलग्रेड (युगोस्लाविया) में 'अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा काव्य गोष्ठी' का आयोजन हुआ। इस कार्यगोष्ठी की मुख्य उपलब्धि 'बेलग्रेड घोषणा-पत्र' था, जिसमें भारी बहुमत से संभागियों ने पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। पर्यावरण शिक्षा के इतिहास में यह पहली इस प्रकार को प्रारम्भिक कार्यगोष्ठी थी, जिसमें विश्व के 60 राष्ट्रों के 96 प्रतिनिधियों ने अपना मत प्रस्तुत किया था। इसी कार्यगोष्ठी में निम्नलिखित लक्ष्य रखे गए हैं-

1. पर्यावरण के लिए लक्ष्य,

2. पर्यावरण शिक्षा के लिए लक्ष्य, तथा पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य ।

विश्व के पॉचो क्षेत्र अफ्रीका, अरब राज्य, एशिया, यूरोप तथा उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका के प्रतिनिधियों नै सभी स्तर के विद्यार्थी व युवकों के पर्यावरण कार्यक्रम के कार्यक्रम पर विचार-विमर्श किया ।

इसअन्तर्राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी के आधार पर पाँच क्षेत्रिय बैठकें निम्न प्रकार आयोजित हुई । यह सभी बैठकें पर्यावरण शिक्षा विशेषज्ञों के लिए थीं और इनका लक्ष्य निकट भविष्य में एक अन्य होने वाली अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए अपनी-अपनी अभिशंसाएँ देना था ।

पर्यावरण शिक्षा पर विशेषज्ञों की क्षेत्रीय बैठकें

1.अमेरिका ब्रजेविल्ली(कांगो गणराज्य)
11 से 16 सितम्बर, 1976ई.

2.लैटिन अमेरिका और कैरिबियन
बोगोटा (कोलम्बिया) 24 से 30 नवंबर, 1976 ई.

3.अरब प्रदेश कुवैत (सऊदी अरब)
21 से 25 नवंबर, 1976 ई.

4.एशिया बैंकाक (थाईलैंड)
15 से 20 नवंबर, 1976 ई.

5.यूरोप हेलेसिन्की (फिनलैंड)
27 से 31 जनवरी ई.

इन क्षेत्रिय बैठको की अभिशंसाओं के आधार पर पुनः अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का 'पर्यावरण शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ' 14 से 26 अक्टूबर,1977 ई. के मध्य रुस के तिबिलिसी शहर में आयोजित हुआ । इस सम्मेलन में पर्यावरण शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सिद्धांत और मार्गदर्शन बिन्दुओं को अंतिम रूप दिया गया । भारत में भी विभिन्न स्तरीय कानफ्रेन्सेज, कार्यगोष्ठिया हुई, जो पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में I.E.E.P. के सहयोग से हुई ।

इसके अतिरिक्त एक 6 दिवसीय-4 से 9 मार्च, 1985 ई. में पर्यावरण शिक्षा पर द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के दिल्ली में आयोजन का उल्लेख देशबन्धु ने किया है। इस पृष्ठभूमि के आधार पर भारत के तथा राज्यों के पर्यावरण विभाग अपने-अपने प्रदेशों और राज्यों में पर्यावरण शिक्षा की अलख जगाये हुये है। ये विभाग केन्द्र और राज्य स्तर पर तथा अन्य संस्थाओं के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाने का प्रयास कर रहे हैं और हर स्तर के व्यक्ति को पर्यावरण की विषयवस्तु की जानकारी प्रदान कर रहे हैं।

बोध प्रश्न (Self Check Questions)

पर्यावरण में शिक्षा का महत्त्व समझ सकेंगे।